IIJIF
Indexed 1675
GENERAL IMPACT FACTOR
INTERNATIONAL PEER Reviewed JOURNAL
ISSUE-15 VOL-1 IMPACT -1..5299 ISSN-2454-6283 January-March -2019

शोध-ऋतु

सम्पादक
[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

अनुक्रमणिका

1.अनुवाद का स्वरूप एवं प्रक्रियाँ–डॉ. बेवले ए. जे–05
2.धर्मवीर भारती की काव्यवृत्ति एवं काव्य गुण–गौरव त्रिपाठी–09
3.विकास बनाम विनाश : 'दूब' और 'पार' के विशेष संदर्भ में -डॉ इन्दु पी एस-12
4.समकालीन हिंदी कविता में पारिस्थितिक बोध- डॉ.सी. एस. सुचित्त–17
5.स्वतः आत्मबोध : एक अध्ययन–माधवी तिवारी–21
6. समकालीन हिन्दी कविता में बदलते राजनीतिक संदर्भ -महेष एस-23
7.राष्ट्रीय चेतना के कवि माखन लाल चतुर्वेदी–डॉ. संगीता मलिक–27
8.'21 वी सदी का हिन्दी गद्य साहित्य और विविध विमर्श के लिए प्रस्तुत शोधालेख 'स्त्री विमर्श' के संदर्भ में।'
रेडिओ नाटक 'ऊष्मा'- प्रा.डॉ. संजय व्यंकटराव जोशी-31
9. अस्मिता की तलाश और दलित - प्रो. संजय एल. मादार-34
10.The Position of SCL Literature in Education and its Translation into English Language.-Dr. Rajendra-40
11.समकालीन कथा साहित्य में किन्नर विमर्श:'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' उपन्यास के विषेष सन्दर्भ में-
प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्थ'-48
12.दुष्यन्त कुमार की कविताओं में देश की दशा पर व्यथा–उमाकान्त–52
13.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन– वन्दना गुप्ता.57
14.मध्य प्रदेश में कबीरपंथ की धर्मदासी शाखा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं महत्वपूर्ण स्थलः एक विवेचनात्मक अध्ययन–उदय अढ़ाऊ–64
15. असगर वजाहत की कहानियों में लोकतंत्र -डॉ विषणु तंकप्पन-73

8.'21 वी सदी का हिन्दी गद्य साहित्य और विविध विमर्श के लिए प्रस्तुत शोधालेख 'स्त्री विमर्श' के संदर्भ में।'

रेडिओ नाटक 'ऊष्मा'

प्रा.डॉ. संजय व्यंकटराव जोशी
सहाय्यक प्राध्यापक हिंदी विभाग
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद

इक्कीसवी सदी में हिन्दी गद्य साहित्य विषयपर सूक्ष्मताओं से विमर्श हो रहा है। भूतकालीन और वर्तमान कालीन सा हित्य को देखकर भविष्य का हिन्दी साहित्यकौनसी करव ट ले सकता है। इसको समझना जरूरी है। बाजारीकरण, उद्योगिकरण से मनुष्य इक दूसरे के बहुत नजदीक पहुँच गया है। एक दूसरे से सभी प्रभावित हो रहेहै। पैसा अपने अं गुलियों पर आदमी को नचाने की कोशिश कर रहा है। झु ग्गी झोपडियाँ, टूटे घर, गाँव हटकर बिखर रहे है। नगर श हर महानगर बनते जा रहे है। रोज नवीनविकास यात्राएँ और उसके साथ नव-

नवीन मुश्किले सामने आरही है। इक्कसवी सदी में हिन्दी गद्य साहित्य कौनसी दिशाओं की ओर जारहा है। यह देख ना जरूरी है।

आधुनिक गद्य साहित्य की परम्परा सुदीर्घ है। भारते न्दुकाल से चली आयी यह परम्परा रही है। इसमें विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी विभिन्न रचनाओं केमाध्यम से नये नये विषय सामने लाये गद्य और पद्य दोनों विधाएँ समान रु प से काल में प्रवाहित होती रही. विभिन्न पडावों से गुजर ता हमारा गद्य साहित्य भारतेन्दुकाल द्विवेदी काल, प्रेमचं द,प्रसाद जैसे मौलिक कालों के माध्यम से आगे गुजरता हुआ प्रवाहमान रहा वर्तमान दौर में जो साहित्य गद्य और पद्य में संम्मिलित है, वहकहीं न नहीं अतित मे वर्तमान दृष्टि से प्रस्तुत हुआ साहित्य है। लेकिन इसमें मात्र अतित का चिंतन नही है। इसमें इक्कीसवी सदी में घटीत हो रही नवी न घटनाओं काविषय विवरण प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोधालेख में गद्य साहित्य की नाटक विधा में प्रस्तुत लेखिका 'मृदूला बिहारी' की रेडिओ नाटक 'ऊ ष्मा' पर चिंतन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। 'मृदूलाबि हारी' नवीन विचारधारा रखनेवाली एक सक्षम रचनाकार मानी जाती है। आपने कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटक के क्षेत्र में योगदान दिया है। लेकिन नाटक, दूरदर्शनतथा फिल्मों मे आपकी प्रतिभा के निखार पाया है। दूरदर्शन और आकाशवाणी के लिए आपने पचास से भी अधिक नाटक लिखे है। आपके लिखे 'भोर' धारावाहिक कोदूरदर्शन द्वारा सर्वश्रेष्ठ धारावाहिक का अवार्ड दिया गया है। निर्वासित व सन्त, जिन्दगी एक खुशबू, जरूरत तथा मुंबई जैसे नाटक हिन्दी रंगमंच पर काफी चर्चित रहे है।अंधेरे से आगे, सूर्या स्त से पहले तथा दीप से दीप जले आपके एकांकी संकल न है 'मृदूला बिहारी' नारी मन के आंतरिक मन को छुने और पकडने की क्षमता रखती है। इनकी रचनाएँ मौलिक

है। आपको साहित्य सम्मान 'मीरा' पुरस्कार, झारखंड का राधाकृष्ण पुरस्कार, बिहार का नई धारा रचना सम्मान के साथ अन्य कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। इनकी अनेक रचनाओं का अंग्रेजी, उर्दू, तेलगू, गुजराती आदी भाषाओं में अनुवाद हुवा है। सन 2010 मे उन्होंने चीन में आयोजित 'बिजींग इंटरनॅशनल बुक फेयर' में साहित्य अकादमी नई दिली की ओर से भारत काप्रतिनिधीत्व किया था।

'मृदूला बिहारी' के 'ऊष्मा' रेडिओ नाटक में भौतिक लिप्साओं की अन्धी दौड में रिश्तो की 'ऊष्मा' खाते नीरस, ऊबाऊ, संत्रस्त परिवार की त्रासदी है। नाटक मे विदेशमें जिते एक परिवार की त्रासद कथा है। माता पिता अपने परिवार में व्यस्त है। आर्थिक आय खूब है। लेकिन अपने बच्चो के लिए उनके पास समय नहीं है। परिणामत:बच्चे पाश्चात्य सभ्यता के बिगडैल संस्कारों के आदी हो जाते है। अपना देश, अपनी भाषा, अपनी सभ्यता से कोसो दूर माता पिता की 'ऊष्मा' से तिरोहित होकर सभीबंधनो और सीमाओं को पार कर जाते है। उद्डंता, उच्छृंखलता के आदी हो जाते है। लेखिका इस 'रेडिओ नाटक' के द्वारा आज के मातापिता को कल के खतरे के प्रतिआगाह करती दिखाई देती है। 'ऊष्मा' में लेखिका स्त्रि जीवन की संवेदना के प्रति अपने विचारों को प्रस्तुत किया है। वैश्विकरण के इस जीवन मे आज मनुष्य अंदर से पूरीतरह से टूटता हुआ दिखाई देता है। उसकी संवेदना लगभग मरती जा रही है। रिश्तों में दरार आ रही है। और स्वार्थी मनुष्य हो गया है। भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्योंको हम भूलते जा रहे है। और मानवता धर्म का तिरोहित होना इसी का परिणाम हो गया है। लेखिका ने इस 'रेडिओ नाटक' के माध्यम से विदेश में जिते एक ऐसे परिवार कोदिखाने की कोशिश की है। जिस परिवार के बच्चे अपने मातापिता के संस्कारों से पूरी तरह से ओझल दिखाई देते है। इस रचना में जिन पात्रों के माध्यम से कथा को प्रस्तुत किया है, उसमें विवेक, श्यामला, मिलिन्द, महिमा और माँ को चित्रित किया गया है। विवेक और श्यामला पतिपत्नी है। मिलिन्द और महिमा उनके बच्चे है जिसमेंमिलिन्द की उम्र 18 वर्ष और महिमा की उम्र 16 वर्ष की है।

'ऊष्मा' रेडिओं नाटक में स्त्री विमर्श को बडी मौलिक रुप में चित्रित हम देख सकते है। क्योंकि इसमें 'श्यामला' जो की 'मिलिंद' और महिमा की माँ है। वह अपनेबच्चों पर अपने संस्कारों का प्रभाव करने में असमर्थ दिखाई देती है। विदेश में रह रहा यह भारतीय परिवार है। जिसकी धुन पूरी विदेश में बन गयी है। इसमें भारतीयसंस्कारों की तडप नजर आती है। लेकिन वह सफल नही हो पाते है। माता पिता के प्रति आदर केवल भारतीय संस्कृति में हम देख पाते है। लेकिन इसपर पाश्चात्य संस्कृतिका परिणाम हो रहा है। 'मिलिन्द' और 'महिमा' देर रात तक बाहर रहते है। घर वापिस नही आते बहार रहकर इनको बुरी आदते लग रही है। इनके प्रति सतर्कता मातापितामें दिखाई देरही है। लेकिन वह कुछ करने में बार बार असमर्थ दिखाई देते है। इसी कारण श्यामला को अपने बच्चो के प्रति परेशान हम नाट

…रे देखते है।लेकिन 'श्यामला' के अंतरमन से जोकि उस के चेतनअचेतन मन का भाग है। 'माँ' बोलती है। तब श्यामला को अपने बच्चों के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करना जरूरी है। यह बात समझ मे आती है। 'माँ' कहती है। "बेटी 'स्त्री' का जीवन चुनौती से भरा होता है। क्योंकि वह घर की जमीन होती है।" श्यामला को कुछ समझ मे नही आरहा की वह अपने बच्चे को कैसे रास्ते पर लाये वह पूरी तरह से गडबडा गई है। उसको अपने बच्चो का भविष्य अंधकार मे दिखाई दे रहा है। क्योंकि बच्चे माता-पिता केप्रति रुष्ठ दिखाई देते है। नागरी जीवन की एक बात को भी यहाँ दिखाया गया है। जिसमे माता-पिता नौकरी के लिए बाहर जाते है। आधी रात वापस आते है। जिसके कारणबच्चो के साथ एकसाथ मिलबैठना कम होता है। इसलिए बच्चो और मातापिता मे लगाव भी खुद कम होता दिखाई देता है। यह भी भटकन कहीं ना कहीं पाश्चात्य संस्कृतिका ही परिणाम है। जिसको आज हम नागरी जीवन मे देखते है। इसकारण से बच्चो का मातापिता के प्रति लगाव प्रेम, आत्मियता कम होती दिखाई देती है।

'श्यामला' का स्त्री भाव और उसकी कशमकश यहाँ प्रस्तुत होती है। 'स्त्री' का जीवन जिसमे मूलता त्याग, वात्सल्य, प्रेमभाव है। लेकिन वह परिस्थिती के कारणअसमर्थ दिखाई देती है। इस बात को लेकर 'श्यामला' को पश्चाताप होता है की वह अपने बच्चो को वक्त नही दे पाती है। लेकिन क्या करे इसीकारण जब वह हताश होती हैतो उसकी 'माँ' उसके अंतरमन मे आती है और उसके साथ संवाद करती है। और कहती है की तू अपने बच्चो को समझने की कोशिश कर तभी वह तेरा सुनेंगे और तेरे प्रतिप्रेम और आत्मियता उनकी बनी रहेगी. 'श्यामला' की माँ उसको कहती है, "माँ हर युग मे माँ रहेगी धैर्य और ममत्व की अपार सम्पदावती संसार की कोई भी भावना, प्रेमका कोई स्वरुप इसकी समता नही कर सकता इस उँची दौड के दमघोंटू अहसासों से मुक्त होकर बच्चो का जीवन तराश सँवार सको तो इससे बढकर दूसरी कोई उपलब्धिनही."

प्रस्तुत शोधालेख मे इस बात की ओर भी ध्यान देने का प्रयास किया गया है की, 'स्त्री' के जीवन संघर्ष मे परिवार ही मुख्य विषय है। जिसको उसको ध्यान देनाआवश्यक है। वह संपूर्ण परिवार का छत है। 'स्त्री' एक माता, पत्नी, बहन, सास इत्यादी भूमिकाओं को निभाती है। हर भूमिका मे उनका वात्सल्य भाव ही महत्वपूर्ण होताहै। उसके किसी भी पक्ष को समझने की कोशिश हम करें तो यही भाव, यही प्रेम उसका उसके व्यक्तित्व के साथ उनके जीवन को भी सफल बना देता है। 'श्यामला' केमाध्यम से प्रस्तुत स्त्री केवल विदेश रहती भारतीय 'स्त्री' नही है। वह हर स्त्री का प्रतिनिधीत्व करती है, जिसका जीवन इस प्रकार के द्वंद्व मे है। लेकिन आखिर मे एकपरिवार को बांधने का काम जिसप्रकार स्त्री की जीवन तपस्या होती है। वैसे ही हर स्त्री का वास्तविक जीवन आज का हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :1) प्रतिनिधी महिला एकांकी : सं.डॉ.माधव सोनटक्के2) 'मृदूला बिहारी' का परिचय और अन्य : गुगल (नेट) के आधा